साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 42, अगस्त(प्रथम) , 2018

डॉ० रिक लिंडल द्वारा रचित अंग्रेजी पुस्तक 'The Purpose' के हिंदी अनुवाद का अगला भाग

लेखक - डॉ० रिक लिंडल

अनुवादक - डॉ० अनिल चड्डा

अध्याय 8

...गतांक से आगे

शक्ति

"जबकि प्रभुत्व के द्वारा शक्ति की आवश्यकता अपने आप में एक भावना नहीं है, मैं यहाँ इसका जिक्र करूँगा, क्योंकि यह मस्तिष्क की ऐसी अवस्था है जिसका सम्बन्ध दूसरों के स्नेह और प्रेम के खोने के भय से है.

"प्रभुत्व के द्वारा शक्ति विशेषतया रोमानी रिश्तों में और व्यक्ति के काम की जगह पर आम हैं. इन सभी दृष्टान्तों में, यह कार्य भय से प्रेरित है, या तो प्रेम के न पाने पर या किसी को पसंद न आने पर, या अनचाहे या परित्यक्त व्यक्ति होने पर. लेकिन प्रभुत्व के माध्यम से हमेशा ही शक्ति की जो मंशा होती है, ठीक उससे उल्टा ही प्रभाव होता है. यह दोनों, वर्चस्व रखने वाला और जिसके ऊपर प्रभुत्व रखा जाता है, को एक-दूसरे से दूर करता है, क्योंकि प्रेम और दया की भावनाओं में रूकावट आ जाती है और उन्हें कोई अभिव्यक्ति नहीं मिल पाती. जब यह होता है, तो प्रभुत्व रखने वाले धीरे-धीरे अस्तित्ववादी उत्सुकता का अनुभव करना शुरू कर देते हैं, जिसकी प्रतिक्रिया वह सम्बन्ध में ज्यादा शक्ति का प्रयास करके करता है, इस आशा में कि उसे फिर से प्रेम किया जायेगा, लेकिन यह कभी कामयाब नहीं होता."

“मेरे मित्र ब्जोर्न ने एक बार बताया था कि उसके पिता ने उसकी माँ का शारीरिक शोषण किया था. वह उस पर डरा-धमका कर और आक्रामकता से कुछ वर्षों के लिये प्रभुत्व जमाता रहा, जब तक कि एक दिन उसमें उसे छोड़ कर जाने का साहस नहीं आ गया. मैं समझता हूँ कि जो तुम वर्णन कर रहे हो यह पूरी तरह से उस पर खरा उतरता है?”

“हाँ, वह एक अच्छा उदाहरण है: वैवाहिक शोषण और जिसे ‘पिटी हुई पत्नी लक्षण’ कहा जाता है. पिटने वाले जीवनसाथी का आत्मविश्वास और आत्म-महत्व इतना कम हो जाता है कि उनमें छोड़ कर जाने का साहस नहीं होता, उस समय भी जब उनके जाने के लिये दरवाजे खुले हों.

“प्रभुत्व के माध्यम से शक्ति एक घातक प्रक्रिया है, और यह समाज के सभी स्तरों पर होती है - तानाशाह से ले कर शयनकक्ष तक.”

“मैंने सारे संसार में शक्ति के द्वारा शोषण होने के बारे में पढ़ा है.”

“हाँ, लेकिन सावधान रहना कि प्रभुत्व के द्वारा शक्ति को नेतृत्व, हैसियत, या सम्मान, जो एक व्यक्ति को उसके मित्र-समूह द्वारा प्रदान किये जाते हैं, से मत मिलाना. फिर भी, अक्सर नेतृत्व के दृष्टिकोण से क्या होता है कि नेतृत्व को शक्ति पाने के लिये विकृत कर दिया जाता है. यह ज्यादातर राजनैतिक क्षेत्र के लिये विशिष्ट है, जब एक नेता को इससे डर लगने लगता है कि उसका पद छीन लिया जायेगा. जैसे-जैसे उसका डर बढ़ता जाता है, वह अपने पराधीनों पर प्रभुत्व के माध्यम से शक्ति का जोर लगाता है. यह सामान्यतया इस विश्वास के सन्दर्भ में है कि वह अपने विरोधियों के साथ उच्च नैतिक आधार के किसी विशेष मुद्दे पर प्रतिस्पर्था में हैं. लेकिन, जैसा कि, एक सामजिक स्तर, व्यक्तिगत सम्बन्धों में सच है, प्रभुत्व के माध्यम से शक्ति पाने की जो मंशा होती है उससे निरपवाद रूप से प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है. पराधीनों में जो प्रेम और दयाभाव अपने नेताओं के प्रति होता है, उसमें रुकावट आ जाती है और उसे अभिव्यक्ति नहीं मिलती, और नेता ज्यादातर दूर होते हुए और अपने आप को अप्रिय महसूस करने लगते हैं. अस्तित्ववादी उत्सुकता पैठना शुरू कर देती है, और नेता धीमे-धीमे एक तानाशाह में बदलना शुरू हो जाता है, क्योंकि वह, इस उम्मीद में कि वह फिर से अपने पराधीनो के प्रेम का अनुभव करेगा, शक्ति का ज्यादा से ज्यादा जोर लगा कर प्रतिक्रिया करता है, लेकिन यह कभी काम नहीं करता. प्रभुत्व के माध्यम से शक्ति का अनुसरण एक अस्तित्ववादी उत्सुकता की अभिव्यक्ति है और गल्ती से यह मान कर चलता है कि प्रेम को जबरदस्ती माँगा जा सकता है.”

“मेरे लिये यह बहुत अर्थवान है. मैं देखता हूँ लोग अक्सर अपने नेताओं के लिये, जैसे-जैसे वह ज्यादातर तानाशाह बनते जानते हैं, घृणा विकसित कर लेते हैं.”

“हाँ, वह सामान्यतया होगा. परन्तु, घृणा कुछ ज्यादा ही जटिल भावना है.”

घृणा

"घृणा का स्रोत उन भावनाओं से थोड़ा ज्यादा पेचीदा है जिनके बारे में हमने अभी तक बात की है. जैसा कि सभी नकारात्मक भावनाओं के साथ होता है, घृणा की जड़ों को उसमें अंतर्निहित डर में खोजा जा सकता है; कुछ घटनाओं में यह केवल एक तीव्र डर का प्रकट होना है, या एक नापसंदगी का. दूसरी घटनाओं में यह दूसरी भावनाओं के साथ सम्मिलित हो कर ऊपर आती है जो एक स्थिति में पहले से ही उत्पन्न हो चुकी होती है, जैसे कि ईर्ष्या या क्रोध, और इसका प्रभाव उन भावनाओं को बढ़ाने में होता है.

"परन्तु, एक जटिल आंतरिक मनोवैज्ञानिक संघर्ष घृणा के साथ शामिल होता है, जिसके बारे में मुझे तुम्हे इस भावना की क्रियाशीलता को पूरी तरह से समझने से पहले बताना होंगा."

"तुम किस तरह के मनोवैज्ञानिक संघर्ष की बात कर रहे हो?"

"मैं इन उदाहरणों से वर्णन करूंगा. एक दृष्टान्त में तुम अपने एक पहलु से घृणा कर सकते हो, जिसके साथ तुम समझौता नहीं कर पाये, और जब तुम वह वही गुण किसी दूसरे व्यक्ति में देखते हो तो तुम इससे घृणा करते हो, और तुम उन्हें कष्ट देने के लिये अपने-आप को मजबूर महसूस कर सकते हो. तुम हमेशा उनसे घृणा करते हो जो उन भावनाओं से निराश करते हैं जिनसे तुम अपने अंदर होने के कारण घृणा करते हो. डराना-धमकाना, समलैंगिकता से डर, और समलैंगिकों को मारना, जब यह दूसरों प्रकट किये जाते हैं तो, इस तरह की आंतरिक घृणा के अच्छे उदाहरण है. एक अलग स्थिति में, किसी के प्रति तुम्हारी घृणा का स्रोत, या एक ऐसी स्थिति की ओर जाना जो विकसित हुई है, हो सकता है कि किसी ऐसे आदर्श के प्रकट होने से बनता हो जिसे तुमने अन्तस्थ किया हुआ है, जैसे कि अपने साथियों के लिये अच्छाई और कोई भेदभाव न होना. जब तुम देखते हो कि यह आदर्श अपमानित हो रहा है, तो तुम इसे करने वालों के प्रति घृणा महसूस कर सकते हो. दूसरी परिस्थितियों में, तुम एकतरफ़ा प्रेम के परिदृश्य में घृणा महसूस कर सकते हो, जब कोई तुम्हारे और तुम्हारे प्रेमी के बीच आ जाता है और उसे तुमसे दूर ले जाने के लिये धमकाता है. इस उदाहरण में, घृणा इर्ष्या की भावना की परत के साथ पैदा होती है जो इस स्थिति में उत्पन्न हुई है."

"मैं समझ गया....इसमें एक आंतरिक संघर्ष शामिल है."

"घृणा की एक और दिलचस्प विशेषता है कि इसमें हमेशा ही प्रेम से बिछुड़ने की एक पीड़ादायक अनुभूति होती है, या एक अन्तस्थ आदर्श की जिसके साथ तुमने अपनी स्नेहमयी पहचान बनाई है. उदाहरण के लिये, प्रेम से एक पीड़ादायक अलगाव का प्रमाण है, जहाँ एक बच्चा अपने माता-पिता पर चिल्लाता है 'मैं तुमसे घृणा करता हूँ!' यहाँ पर क्या हो रहा है कि (क) बच्चा अपने माता-पिता को आदर्श मान लेता है और (ख) आशा करता है कि उसके माता-पिता भी उसको अपना आदर्श मानेंगें. वह अपने माता-पिता के लिये आदर्श प्रेम का प्रतिबिम्ब उसकी ओर अपने माता-पिता के व्यवहार में देखने की आशा करता है. जब यह प्रतिबिंबित नहीं होता (क्योंकि, जैसा कि मैंने अभी वर्णन किया है, प्रेम एकतरफा है), तो एक गहरा

गुस्सा या एक डर बैठ जाता है. बच्चा उस समय अपने कथन में अपने माता-पिता को वास्तव में कह रहा है, 'मैं तुम्हे प्यार करता हूँ. तुम मेरे साथ इतने निर्दयी क्यों हो?' या 'हमारे और उस प्रेम के बीच में, जो मैं महसूस करता हूँ, क्या रुकावट है?' एक अजीब से रूप में, तब, घृणा की भावना प्रेम के लिये एक खोज है. यह एक अलगाव के बारे में बताती है जिसका अस्तित्व किसी आशा को ले कर है, और यह संवाद करने के लिये आशा की अभिव्यक्ति है. इस उदाहरण में, यह बच्चे का एक व्यक्तव्य है जो अपने माता-पिता के लिये आदर्श प्रेम के प्रतिबिम्ब को अनुभव न कर पाने पर हैरान है.

घृणा की भावना में हमेशा ही प्रेम से अलगाव की एक
पीड़ादायक अनुभूति होती है.

"मैं समझ गया. मैं बच्चे के द्वारा घृणा महसूस करने के इस उदाहरण को समझता हूँ. मैं किसी के लिये घृणा महसूस करने के उदाहरण को भी समझता हूँ, या एक परिस्थिति जो विकसित हो गई है, जब मेरे द्वारा अन्तस्थ किये गये आदर्श को अपमानित किया जाता है. लेकिन उस उदाहारण का क्या जो तुमने डराने-धमकाने और समलैंगिको के डर के बारे में दिया था. वह किस तरीके से प्रेम से एक पीड़ादायक अलगाव है?"

"उस उदाहरण में, एक आंतरिक संधर्ष है जो पीड़ा दे रहा है. जैसा कि तुम जानते हो, आत्मा का मूलतत्व प्रेम है, और जब बाहरी अहम भौतिक संसार में अपने अनुभव से एक निष्कर्ष पर पहुँचता है कि इसे अपनी आंतरिक पहचान के एक पहलु से घृणा करनी है, तो एक अन्तस्थ पीड़ादायक संघर्ष पैदा होता है और प्रेम से अलगाव की एक इच्छा पैदा होती है, जो कि आत्मा का मूलतत्व है. (इसके साथ ही एक गुस्से का अनुभव भी होता है जो अपने ऊपर आता है.) यह चोट और गुस्सा फिर बाहर किसी व्यक्ति पर प्रकट होता है जो उन्हें अपने आंतरिक संघर्ष की याद दिलाता है."

"मैं समझ गया...."

"घृणा करने से और घृणा अपने-आप में हिंसा की ओर नहीं ले जाती; इसके बजाय यह एक समझने की कोशिश है."

"मैंने अपने कुछ मित्रों को देखा है जो एक क्षण तो प्रेम में होते हैं और फिर, थोड़े समय बाद, उनमें से एक दूसरे के प्रति पागलपन की हद तक ईर्ष्यालु हो जाता है और उनसे घृणा करने के बारे में बात करता है. घृणा उन्हें कष्ट पहुंचाती है!"

तुम दूसरे व्यक्ति में अपना प्रतिबिम्ब देखते हो -
एक प्रतिबिम्ब जो तुम प्रेम के सम्बन्ध में देखना चाहते हो,
और एक प्रतिबिम्ब जो तुम घृणा के सम्बन्ध
में देखना चाहते हो.

"घृणा करने वाला हमेशा अपनी घृणा की वस्तु की ओर एक गहरे मनोवैज्ञानिक बंधन से आकर्षित होता है, उसी तरीके से जैसे एक प्रेम करने वाला अपने प्रेमी की ओर आकर्षित होता है."

"उससे तुम्हारा क्या मतलब है?"

"प्रेम और घृणा वो घटनाक्रम हैं जो किसी के अपने एक पहलु से उत्पन्न हो रहे है और दूसरे व्यक्ति पर प्रकट होते हैं. तुम दूसरे व्यक्ति में अपना प्रतिबिम्ब देखते हो - एक प्रतिबिम्ब जो तुम प्रेम के मामले में पसंद करते हो, और एक प्रतिबिम्ब जिससे तुम घृणा के मामले में घृणा करते हो."

"घृणा तुम्हे उस चीज को वापिस पाने के लिये प्रेरित करती है जिसे तुम मानते हो कि तुमने खो दिया है, या तुम्हे उस सम्पर्क की ओर ले जाता है जो तुम्हे किसी संकल्प के समीप ले जाता है. घृणा प्रेम से इंकार करना नहीं है, अपितु इसे फिर से पाने की कोशिश है, और परिस्थिति की एक पीड़ादायक पहचान है जो तुम्हे इससे अलग करती है."

"तब, क्या घृणा के पीछे की मंशा उस समस्या को सुलझाने की है जो उस के साथ है जिससे तुम घृणा करते हो, चाहे वह तुम्हारी अन्दर की घृणा हो, किसी और के लिये तुम्हारी घृणा की भावना हो, एक ऐसी परिस्थिति जिसमें तुम्हारे आदर्श को अपमानित किया गया हो, या कि घृणा जो तुम उसकी ओर महसूस करते हो जो तुम्हे उससे अलग करने के लिये धमकाता है जिससे तुम प्रेम करते हो, जैसे कि इर्ष्या के मामले में है?"

घृणा प्रेम से इंकार नहीं है,
अपितु इसे पाने की एक कोशिश है,
और उस परिस्थिति की एक पीड़ादायक
पहचान है जो तुम्हे इससे अलग करती है.

"हाँ. वह अंतिम मंशा है, और वास्तव में तुम्हारी आध्यात्मिक मंशा है. लेकिन जैसा कि तुम अच्छी तरह से जानते हो, वह प्रक्रिया अक्सर होती नहीं है और घृणा कभी-कभी दूसरों की हत्या में फलीभूत हो जाती है."

"तो क्या वह उसका उदाहरण नहीं होगा जब एक व्यक्ति दैविक चुनौती में विफल हो गया हो, अर्थात, उसके उन नकारात्मक भावनाओं को अनुभव करने के बाद जिन्हें उसने अनुभव करना चाहा था?"

"हाँ यह है."

रिक्की ने जो वृद्ध आत्मा ने उसे घृणा के बारे में पढ़ाया था उसका विश्लेषण करने में कुछ पल लिये, और फिर एक दूसरा ही प्रशन पूछा, "क्या एक व्यक्ति की आयु और घृणा के रूप में, जो उनमें दूसरों के लिये है, कोई सम्बन्ध है?"

"कोई निश्चित नियम नहीं हैं, लेकिन घृणा का अनुभव सामान्यतया छोटे बच्चों में क्षणभंगुर होता है और जल्दी ही प्रेम के पक्ष में समाप्त हो जाता है, क्योंकि बच्चे को यह पता चल जाता है कि जो प्रेम वह अपने माता-पिता के प्रति महसूस करता है वह उसे वापिस नहीं मिल रहा है और यह कि जो प्रेम उसके माता-पिता उसके प्रति महसूस करते हैं उसका उस प्रेम के साथ, जो वह उनके प्रति महसूस करता है, कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है. जैसे-जैसे बच्चे को धीरे-धीरे समझ में आता है, उसमें भावुकता की स्वायत्ता विकसित होने लगती है.

"किशोरावस्था और युवा वयस्कता में, जब लोग अपने जीवन के उद्देश्य के मुद्दों के साथ संघर्ष करने के मध्य में होते हैं तो घृणा एक स्थाई गुण की तरह हो सकता है. उदाहरण के लिये, यह स्कूल में या काम के स्थान पर आगे बढ़ने के लिये, या अपने मित्र समूह में एक साधारण अवस्था और स्वीकृति के लिये, जिसमें व्यक्ति को डराया-धमकाया जा सकता हो, एक मानी गई आशंका की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हो सकता है. फिर भी, घृणा शायद ही कभी जीवन की बाद की आयु में होती है, लेकिन जब यह होती है, तो यह सामान्यतया उन व्यापक मुद्दों पर केन्द्रित होती है जिनका सम्बन्ध इंसानियत से होता है."

आदमी को सभी मनुष्यों के संघर्ष के लिये एक पद्धति को विकसित करना चाहिये जो बदले, आक्रमण और प्रतिशोध को अस्वीकार करे. ऐसी पद्धति की नींव प्रेम है.

मार्टिन लूथर किंग, जूनियर

"तो उन लोगों के लिये तुम्हारी क्या सलाह है जो घृणा के भार से दबे हुए हैं?"

"जैसा कि सभी नकारात्मक भावनाओं के साथ होता है, तुम्हारा लक्ष्य भावनात्मक अनुभव प्राप्त करना है. फिर भी, एक बार जब तुम उस भावना को प्राप्त करने में सफल हो जाते हो और उसके उतार-चढ़ाव का अनुभव ले लेते हो, तो तुम्हारी चुनौती किसी और को या स्वयं को चोट न पहुंचाते हुए इसे जाने देना होती है.

"घृणा पर काबू पाने का रास्ता इसे अपनाना है और इसे स्वीकारना है, बजाय इसके कि इसे दबा दिया जाये या इसके अस्तित्व से बाहर होने का बहाना किया जाये. जब तुम इसके अस्तित्व से बाहर होने का बहाना करते हो, तो इसकी एक बहुत ख़राब आदत तब बाहर निकलने की है जब आप बहुत कम उम्मीद करते हैं. उदाहरण के लिये, तुम स्वयं को दूसरों के लिये असामान्य रूप से नीच पा सकते हो, या तुम इसे अपने अंदर जज्ब कर लेते हो और आत्मघाती हो जाते हो. फिर भी, तुम्हारे लिये यह समझना महत्वपूर्ण है कि घृणा स्थिर भावना नहीं है और जैसे ही तुम्हे उन आस्थाओं का पता चलेगा जो इन्हें उत्पन्न करती हैं, तुम अपने-आप ही उस भावना से आगे निकल जाओगे, क्योंकि तुम्हारी खोज स्फूर्ति से तुम्हे डर में फंसा देती है, जो हमेशा ही घृणा के पीछे होती है. और, जैसे सभी नकारात्मक भावनाओं के

साथ होता है, यह प्रेम न किये जाने का या प्यार न करने योग्य होने का डर है, और अंततः अपने प्रेम के मूलतत्व से सम्पर्क खोने का डर जो बहुत भयानक है."

"मैंने एक बार सुना था कि प्रेम और घृणा में एक बहुत महीन रेखा होती है."

"दो व्यक्तियों के बीच प्रेम एक बार स्थापित होने के बाद कभी समाप्त नहीं होता, लेकिन जीवन की परिस्थितियाँ कभी-कभी इसकी अभिव्यक्ति में रूकावट पैदा कर देती हैं और फिर प्रेम शीघ्रतापूर्वक घृणा में बदल जाता है. घृणा की भावना संघर्षों की परत में होती है और, जैसा कि मैंने पहले कहा था, तुम्हे उसे पाने के लिये, जिसे तुम मानते हो कि तुमने खो दिया है, प्रेरित करने के लिये है, या तुम्हे एक संवाद की ओर ले जाने के लिये है जो तुम्हे एक समाधान के करीब ले जाता है."

रिक्की अब तक गहरी सोच में था, क्योंकि घृणा की घटना को समझना जटिल था. जब उसने उसके बारे में सोचा जो वृद्ध आत्मा ने कहा था, तो उसे अचानक ही ध्यान आया कि वृद्ध आत्मा ने पहले जो कुछ कहा था वह इससे कुछ मेल नहीं खाता था. उसने यह टिप्पणी की थी कि प्रेम प्रतिबिंबित नहीं होता. रिक्की को स्पष्टत: याद आया कि उसने कहा था कि प्रेम एकतरफा होता है और यह कि जो प्रेम तुम किसी दूसरे व्यक्ति से महसूस करते हो वह तुम्हारे प्रेम का प्रतिबिम्ब नहीं है. फिर भी वृद्ध आत्मा ने अभी-अभी घृणा के बारे में बात करते हुए यह कहा था कि तुम जिस व्यक्ति से घृणा करते हो उसमें अपना प्रतिबिम्ब देखते हो, और प्रेम में तुम जिस व्यक्ति से प्रेम करते हो उसमें अपना प्रतिबिम्ब देखते हो. रिक्की ने अपने आप में सोचा, "*यह कैसे संभव है कि प्रेम प्रतिबिंबित नहीं होता? मैं यहाँ कुछ कमी महसूस कर रहा हूँ.*"

जैसे कि हमेशा होता आया था, वृद्ध आत्मा ने रिक्की के विचार पढ़ लिये और कहा, "मैं देख सकता हूँ कि तुम इस समय किस चीज से संघर्ष कर रहे हो. प्रेम वास्तव में जटिल प्रक्रिया है. मनुष्यों ने सभ्यता की शुरुआत से ही इसे समझने के लिये संघर्ष किया है. यह प्रक्रिया उससे बहुत ही ज्यादा पेचीदी है जैसा कि मैंने शुरू में वर्णन किया था, और तुम इसे कभी भी सम्पूर्ण रूप से नहीं समझ पाओगे."

"वैसा क्यों है?"

"उसका कारण यह है कि आत्मा का मूलतत्व प्रेम है और तुम स्वयं के अध्ययन के लिये बाहर नहीं निकल सकते. तुम इस रूपक से परिचित हो 'एक हाथी के पाँव के अंगूठे से तुम पूरे हाथी का अनुमान नहीं लगा सकते'. ऐसी ही स्थिति तुम्हारे प्रेम को समझने की कोशिश में है. लेकिन मैं कुछ सामान्य प्रक्रियाओं का वर्णन कर सकता हूँ जो प्रेम की रचना में होती है; यह तुम्हारी भ्रान्ति को कम करेंगी और तुम्हे यह स्पष्ट करने में सहायता करेंगी कि उसका क्या मतलब है जब मैंने कहा था कि प्रेम प्रतिबिंबित नहीं होता."